बनारस में सर्विस में मदद चाहिए। इस समय वहां की सर्विस वृद्धि को पाई हुई है। तो बाप कहते हैं जहां सर्विस देखो तो आजू–बाजू (आस–पास) वालों को सर्विस में मदद करनी चाहिए । वहां सर्विस अच्छी होती है। बाबा का सदैव ख़्याल रहता था। वहां से ही विद्वान आदि पढ़ कर निकलते हैं। कलकत्ते वालों को भी लिखा है शान्ति'–निकेतन बहुत अच्छा है। उस तरफ म्यूज़ियम खुल जाये। तुम्हारा नाम अभी अच्छा होता

जाता है। बाबा ने समझाया है हॉल जो बनाते हैं शादियों के लिए उन्हों को भी समझाना है। बाबा के पास ज़रूर समाचार आ जावेगा। ऐसे–2 समझाया। धर्मशाला भी शादियों के लिए बनाते हैं। लक्ष्मी–नारायण के चित्र बनाये हैं। विशाल बुद्धि जो होंगे वह बड़े साइज़ के चित्र पसन्द करेंगे। गवर्मेन्ट कैलेण्डर्स भी बड़ी बनाती है। छोटे चित्रों के शौकीन जो हैं तो बाबा समझता है छोटी बुद्धि हैं। बड़े चित्र पर समझाना सहज होता है। प्रदर्शनी आदि होते हैं तो छोटे चीज़ नहीं रखनी चाहिए। बड़े चित्र अच्छे हैं। जबकि छप कर तैयार हुई है तो उस पर ही सर्विस करनी चाहिए। यह चित्र बहुत अच्छे हैं। इन पर समझाया बहुत जाता है। बाबा समझते हैं छोटी बुद्धि है; इसलिए बड़े चित्र पसन्द नहीं करते हैं। राजाओं पास, गवर्मेन्ट पास बड़े–2 चित्र होते हैं। बाबा को तो 6 X 4 का साइज़ पसन्द आता है। बड़ा ही क्लीयर है। छोटा घर भी भल हो तो भी मुख्य 6चित्र 6 X 4 के लग सकते हैं। छोटे चित्र नहीं होनी(ने) चाहिए। यह तो 30X 40 का छपाया है। तो कहां भी ले जा सकते हैं। बच्चे समझते हैं पत्थर बुद्धियों को समझाने में कितनी मेहनत लगती है। मेहनत करेंगे तब ही ऊँच पद भी पावेंगे। कहते हैं शिव बाबा से सगाई करते हैं। यह पतियों का पति है। वास्तव में तो बापों का बाप ,टीचरों का टीचर, गुरूओं का गुरू है। पति अक्षर नहीं। पतियों का पति है। नहीं। बाप है ना। बाप से सगाई कैसे होगी? अक्षर बाबा कह देते हो; परन्तु समझाते हैं मैं बाप,टीचर, गुरू हूं । पति नहीं बन सकते। वह रांग है। अँगूठी पहनाई इसका मतलब यह नहीं सगाई नहीं। यह है यादगार। शिवबाबा की याद रहेगी। शिव पति अक्षर कहना रॉंग है। यह यादगार है। ऐसे–2 अक्षर नहीं कही जाती। बाप को पति नहीं कहा जाता। गॉड फादर ही कहते हैं गॉडहसबेन्ड नहीं कहेंगे। तो ऐसे–2 अक्षर विचार कर बोलना चाहिए। कोई (उल्टा) अक्षर न निकले। भगवान क्या सिखलाते हैं। ऐसी–2 बातों को थोड़ा करैक्ट करो। मुख्य है ही तीन। बाप–टीचर–गुरू। वह है आत्माओं का बाप। यह भाईयों–बहनों का बाप बनते हैं। एडॉप्टेड बच्चे हो। वह बच्चे–2 ही कहेंगे। इनके लिए मत समझो। डायरैक्शन वह देते हैं। ज्ञान बड़ा ही अटपटा है। खिटपिट भी होती है। पतित आदमी तुम कहते हो हम भगवान है; परन्तु बुद्धियों का कुछ भी ख़्याल नहीं चलता। जब देखती हो अच्छी सर्विस पर बुलावा होता है तो जाना चाहिए। एक–दो रोज़ में कोई नुकसान नहीं हो जाता है। देहली से एक लिखत आई थी। लेटर अच्छा लिखा हुआ है। जहां म्यूज़ियम है वहां के लिए। ऐसी–2 इन्विटेशन कार्ड्स भेजना अच्छा है। बाप आते ही हैं पढ़ाने के लिए। तुम कहेंगे हम पढ़ते हैं। भगवानुवाचः मैं तुमको पढ़ाता हूं। राजाओं का राजा बनाता हूं। तो पढ़ाई ठहरी ना। सिंगल ताज वाले डबल ताज वाले को माथा टेकते हैं। तो बाप ही राजाओं का राजा बनाते हैं। ऐसी–2 बातें युक्ति से लिखनी चाहिए। भगवानुवाचः है बच्चों मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। यह टॉपिक। राजाओं के राजा तो देवी–देवताएं ही ठहरे। ऐसे–2 विचार–सागर–मंथन कर तुम्हारा अमृतवेले होगा। वह टाइम शुद्ध होता है। रात को तो खराब वायुमण्डल होता है। सबेरे उठ कर विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। 10बजे सोना, 4बजे उठता यह नींद काफी है। जास्ती नींद नहीं करनी चाहिए। खास करके भाषण करने वालों को तो ज़रूर विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। लिखना चाहिए फिर देखना चाहिए। अभ्यास बढ़ जाता है तो फिर वह पक्का हो जाता है। बच्चों को सर्विस का बहुत ख़्याल आना चाहिए। बहुत–बहुत सर्विस कर सकते हैं। घाट पर भी जा सकते हैं। पानी से पाप नाश होते हैं। आत्मा के पाप धोते हैं या शरीर के? आत्मा निर्लेप तो हो न सके। फुर्सत तो बहुत है। मन्दिरों में भी जा सकते हैं। पण्डे के घर में जाकर रहेंगे तो उतना खर्चा नहीं लगता है। धर्मशालाएं भी बहुत हैं। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते। नमस्ते किसने की? गुडनाइट किसने की ? सोचो तो सही। बड़ी गुह्य राज़ है। ओमशान्ति।